IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

शीर्षक:- ज्ञान मार्ग के प्रमुख संतों में से एक कबीर दास जी के बारे में अध्ययन

श्री नरेश कुमार लहरे
(सहायक प्राध्यापक हिंदी विभाग)
सी.एम.दुबे पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, बिलासपुर (छ.ग.)
श्रीमती- प्रतीक्षा सिंह
(सहायक प्राध्यापक हिंदी विभाग)
सी.एम.दुबे पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, बिलासपुर (छ.ग.)

प्रस्तावना:---

कबीर दास जी 15 वीं सदी के महान संत कवि और समाज सुधारक थे| कबीर दास हिंदी साहित्य के भक्ति काल की निर्गुण काव्य धारा का प्रमुख संत थे| उन्होंने अपने जीवन को साधु जीवन और भक्ति के लिए समर्पित कर दिया था। उन्होंने राम और कृष्ण भक्ति के साथ-साथ ईश्वर के प्रति समान दृष्टिकोण का संदेश दिया। संत कबीर ने अंधविश्वास ,पाखंड और सामाजिक कुरीतियों का कड़ा विरोध किया। उन्होंने एकेश्रेरवाद , सामाजिक समानता प्रेम और सच्चे गुरु के महत्व पर जोर दिया। संत कबीर दास मध्यकालीन भक्ति आंदोलन के अग्रणी कवि थे। उन्होंने हिंदू और मुस्लिम दोनों ही समुदाय के लोग बहुत पसंद करते थे। उन्होंने हिंदू मुस्लिम एकता की मिसाल पेश की है बल्कि उन्होंने ईश्वर को एक माना और सभी धर्मो को समानता का संदेश दिया। कबीरदास जी ने अपनी वाणी के माध्यम से प्रेम, समानता, और सच्चे आध्यात्मिक ज्ञान का संदेश दिया। उनका साहित्य आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना उनके समय में था। उनकी साखियाँ, दोहे और पद न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, बल्कि जीवन-दर्शन के मार्गदर्शक भी हैं।

अध्ययन के उद्देश्य:- संत कबीर दास जी द्वारा निम्न उद्देश्य बताए गए

1. **समाज सुधार:-** संत कबीर दास ने समाज में फैले अंधविश्वास ,आडंबर और जाति भेद-भाव का कड़ा विरोध किया। वे समानता और भाईचारे पर जोर देते थे।
2. **भक्ति और आत्मज्ञान:-** कबीर दास के अनुसार ईश्वर बाहरी पूजा - पाठ में नहीं , बल्कि हृदय (आत्मा) में निवास करता है। उनका उद्देश्य लोगों को आत्मबोध (स्वयं को जानना) और हृदय प्रेम के माध्यम से परमात्मा से जोड़ना था।
3. **निर्गुण निरंकार ईश्वर:-** निर्गुण (निराकार) ब्रह्म की उपासना का संदेश दिया, जो सभी धर्म के ऊपर है। उन्होंने राम और रहीम को एक माना है।
4. **ज्ञान और अनुभव:-** संत कबीर दास जी ने पोथी पन्ना के रटे रटाए ज्ञान के बजाय अखियन की अच्छी यानी अनुभव जन्य ज्ञान को प्राथमिकता दी।
5. **नैतिक जीवन और समानता:-** संत कबीर दास जी ने साहित्य का उद्देश्य मानव को सरल ईमानदारी और भाईचारे से भरा जीवन जीने के लिए प्रेरित करना है।

जीवन परिचय:- हिंदी साहित्य के भक्ति काल की निर्गुण ज्ञान श्री शाखा के महानतम कवि संत कबीर दास जी का जन्म 1398 ईस्वी में वाराणसी के लहर तारा के पास हुआ था। उनके पिता का नाम नीरू और माता का नाम नीमा था जो एक जुलाहा परिवार से थे। कबीर दास जी के गुरु रामानंद जी थे ।रामानंद एक महान संत और विद्वान थे, जिन्होंने कबीर दास जी को ज्ञान और भक्ति का मार्ग दिखाया। कबीर दास जी ने रामानंद जी के चरणों में बैठकर ज्ञान और भक्ति की शिक्षा प्राप्त की और आगे चलकर एक महान संत और कवि बने। संत कबीर दास जी का पत्नी का नाम लॉय

था और उनके दो बच्चे थे एक पुत्र और एक पुत्री थे पुत्र का नाम कमाल था और पुत्री का नाम कमाली था । कबीर दास का मृत्यु सन 1518 में मगहर (उत्तर प्रदेश) में हुआ था। उन्होंने अपने जीवन को साधु जीवन और भक्ति के लिए समर्पित कर दिया था। कबीर की मृत्यु

कबीर जी की मृत्यु के बारे में भी एक प्रसिद्ध कथा है।

कहा जाता है कि जब उनका निधन हुआ, तो हिंदू और मुस्लिम दोनों उनके अंतिम संस्कार को लेकर विवाद करने लगे। जब चादर हटाई गई, तो वहाँ केवल फूल मिले। आधे फूल हिंदुओं ने जलाए और आधे मुसलमानों ने दफनाए। यह कथा उनके जीवन के संदेश को दर्शाती है—सभी धर्म एक हैं।

कबीर का प्रभाव, साहित्य पर प्रभाव ,कबीर की रचनाओं ने हिंदी साहित्य को नई दिशा दी। समाज पर प्रभाव उन्होंने सामाजिक समानता और धार्मिक सहिष्णुता को बढ़ावा दिया। आधुनिक समय में प्रासंगिकता आज के समय में भी कबीर के विचार अत्यंत महत्वपूर्ण हैं— धार्मिक सहिष्णुता, मानवता , सादगी , सत्य।

शोध पद्धति:-

संत कबीर दास जी ने शोध पद्धति अनुभव और तर्क पर आधारित था। वे यह मानते हैं कि सच्चा ज्ञान पुस्तकों से नहीं बल्कि जीवन के अनुभव से प्राप्त होता है उन्होंने अंधविश्वास और रूढ़ियों का विरोध किया तथा हर बात को विवेक से रखने की सलाह दी। उनकी साधना आंतरिक थी जिसमें आत्म चिंतन और ज्ञान का महत्व था। संत कबीर ने अपनी बात सरल भाषा में कही ताकि आम लोग भी समझ सके। उनकी पद्धति में समाज - सुधार का दृष्टिकोण भी था, जिसमें जाति - पाति और भेदभाव का विरोध शामिल था। साथ ही कबीर दास ने गुरु को ज्ञान प्राप्ति का महत्वपूर्ण माध्यम माना। कबीर दास जी ने अपनी वाणी को सरल और लोग भाषा में प्रस्तुत किया, जिसमें आम जनता तक उनके विचार आसानी से पहुंच सके। बल्कि सामाजिक सुधार पर भी केंद्रित थी उन्होंने जाति - पाति उच्च - नीच और धार्मिक भेदभाव का विरोध किया। अंत में संत कबीर दास ने गुरु को अत्यंत महत्वपूर्ण बताया क्योंकि उनके अनुसार गुरु ही सही मार्ग दिखाता है और सच्चे ज्ञान तक पहुंचने में सहायता करता है।

संत कबीर दास जी के हिंदी साहित्य में योगदान--

संत कबीर दास हिंदी साहित्य के सबसे महान संत कवियों में से एक माने जाते हैं उनका योगदान न केवल साहित्यिक हैं बल्कि सामाजिक और आध्यात्मिक दृष्टि से भी बहुत महत्वपूर्ण है। कबीर दास जी ने अपनी रचनाएं सरल और जन भाषा व साधारण भाषा (साधुकड़ी, लोग भाषा) में लिखीं, जिसमें आम जनता को आसानी से समझ सके इसमें हिंदी साहित्य का प्रसार हुआ है।

कबीर दास जी का साहित्यिक रचनाएं;- बीजक - कबीर दास जी का वाणियों का संग्रह बीजक कहलाता है , जिनमें तीन भाग होते हैं ।

1. साखी - दोहे
2. सबद - पद
3. रमैनी - चौपाई ,छंद

दोहे और साखी की परंपरा :- कबीर दास जी के दोहे (जैसे बुरा जो देखन मैं चला) आज भी प्रसिद्ध है । उन्होंने दोहा , साखी और सबद के माध्यम से गहरी बातें सरल शब्दों में कहीं है।

कबीर की भाषा और शैली - कबीर की भाषा को "सधुक्कड़ी" कहा जाता है, जिसमें हिंदी, अवधी, भोजपुरी, पंजाबी और फारसी शब्दों का मिश्रण मिलता है। उनकी भाषा सरल, सहज और जनसामान्य की समझ में आने वाली है। यही कारण है कि उनका साहित्य आज भी लोकप्रिय है।

कबीर दास जी का मानवता का संदेश - कबीर दास ने समाज में प्रेम आपसी भाईचारे और मानवता को सबसे ऊपर रखा और कहा कि ईश्वर हर इंसान के भीतर है।

गुरु का महत्व कबीर दास जी के गुरु के रूप में रामानंद का नाम प्रमुख रूप से लिया जाता है। कबीर ने रामानंद जी से दीक्षा लेने के लिए एक अनोखा तरीका अपनाया। वे गंगा घाट की सीढ़ियों पर लेट गए, और जब रामानंद जी वहाँ से गुजरे तो उनके मुँह से "राम-राम" शब्द निकला, जिसे कबीर ने अपना गुरु मंत्र मान लिया। यह घटना प्रतीकात्मक है, जो बताती है कि कबीर जी ने ज्ञान को किसी औपचारिक प्रक्रिया से नहीं, बल्कि आत्मबोध से प्राप्त किया।- संत कबीर दास जी गुरु को भगवान से भी ऊंचा स्थान दिया गुरु गोविंद दोनों खड़े जैसे दोहे से स्पष्ट होता है

दोहा गुरु गोविंद दोऊ खड़े , काके लागू पाए।
बलिहारी गुरु आपने , गोविंद दियो बताएं ।

दोहा का अर्थ --- कबीर दास कहते हैं कि यदि गुरु और भगवान दोनों एक साथ सामने खड़े हो तो पहले किसके चरण स्पर्श करें या दुविधा का विषय है। लेकिन वे तुरंत कहते हैं कि वह अपने गुरु बलिहारी (कृतज्ञ) है क्योंकि गुरु ही वह है जिन्होंने उन्हें भगवान (गोविंद) का मार्ग दिखाया।

कबीर की भक्ति

कबीर के भक्ति ने जन मानव को उसे समय अवलंबन प्रदान किया था । जब वह अपने सिद्धों और योगी की गुहा साधना से ऊब रही थी । कबीर कालीन परिस्थितियों में धार्मिक अवस्था का अवलोकन करते समय हम देख चुके हैं कि उसे समय प्रचलित नाना धर्म साधना किस प्रकार जनता को भूल भुलैया में डाल रही थी। इस महान संत ने अपनी प्रेम भक्ति का ऐसा सवाल और अवलंबन धर्म प्राण जनता को प्रदान किया कि वह राम - रस में भाव वि हाल हो डूबी उठी। यद्यपि कबीर से पूर्व रामानंद जी ने भी भक्ति की ऐसी भावपूर्ण धारा बहाई भी किंतु इसका प्रसार सीमित क्षेत्र तक ही रहा।

कबीर भक्ति का स्वरूप-

कबीर भक्ति पर वैराग्य विचारधारा का आंशिक प्रभाव पड़ा है ।कबीर पर पढ़ने वाले अत्यात्मिक प्रभावो में इसका विश्लेषण किया जा चुका है। कबीर के भक्ति के विवेचन में से पूर्व या आवश्यक हो जाता है कि भारतीय भक्ति का स्वरूप किस प्रकार वर्णित है। आचार्य ने इसकी व्याख्या भिन्न-भिन्न प्रकार से की हैं-

रामानुजाचार्य जी ने कहा परमात्मा के निरंतर स्मरण को ही भक्त कहते हैं

संत कबीर के शब्दों में शब्द साधना सर्व परी है । शब्द ब्रह्म के द्वारा ही सृष्टि का प्रसार विस्तार हुआ है । शब्द ही गुरु हैं जो शिष्य को उपदेश देकर सन्मार्ग पर चलने के नियमित प्रेरित करता है। वेद पुराण आदि सब शब्द ब्रह्म का ही विवेचन करते हैं । सुर - मुनि , संत महात्मा भी शब्द को ही विविध रूपों में वर्णन करके उसे सहज रूप में ग्राह बनाते हैं। शब्द ब्रह्म के द्वारा ही माया के सहारे इस संसार की उत्पत्ति की गई है। शब्द ब्रह्म का भेद निराला है। इसकी साधना अत्यंत कठिन ३ है। कबीर के ही शब्दों में केवल वही कराल काल की मुख से बच सकता है जिसने शब्द ब्रह्म को ग्रहण कर लिया है। इस संसार में सत्य पुरुष अर्थात परम ब्रह्म परमेश्वर वृक्ष के रूप में फैला हुआ है जिसकी शाखाएं निर्जन है ब्रह्मा विष्णु महेश की प्रेरणा से ही ब्रह्मा ने वेदों की रचना करके उसका प्रचार किया शिव ने योग साधना का उपदेश देकर के उसे विश्व में फैलाया और विष्णु ने अपनी योग माया के द्वारा सांसारिक व्यवहारों की रचना की इन त्रिदेवों ने सांसारिक प्राणियों के कर्म के जाल में फंसा रखा है और यमराज 10 द्वारों को रोक कर बैठा हुआ है जो इन सबको त्याग कर कर शब्द अथवा शब्द ब्रह्म को भिन्नता पूर्वक पकड़ लेगा वही आवागमन के बंधन से मुक्त होकर इस संसार सागर के पार जा सकेगा संत पलटू दास के शब्दों में जिसको ब्रह्म शब्द की चोट लग चुकी है वह राजपथ होकर फकीर हो जाता है और उसी की राम की प्राप्ति हो सकती है उसे सांसारिक भोग विलास की वास्तविक रुचि कर नहीं प्रतीत होती है उसका वैराग्य इतना तीव्र होता है कि वह जीवित ही मृत के समान हो जाता है।

कबीर दास जी की अन्य संतों से तुलना- भारतीय भक्ति आंदोलन में कबीर दास का स्थान अत्यंत विशिष्ट है। उन्होंने समाज और धर्म को देखने का एक अलग दृष्टिकोण दिया। उनके विचारों को और गहराई से समझने के लिए उनकी तुलना अन्य संतों से करना उपयोगी है।

1. कबीर दास और तुलसीदास

समानताएँ दोनों ही संत कवि थे और भक्ति को महत्व देते थे। दोनों ने समाज को नैतिकता और धर्म का मार्ग दिखाया। दोनों की भाषा सरल और जनसामान्य के लिए थी।

भिन्नताएँ कबीर निर्गुण भक्ति के समर्थक थे, जबकि तुलसीदास सगुण भक्ति (राम की भक्ति) के। कबीर ने मूर्ति पूजा और आडंबरों का विरोध किया, जबकि तुलसीदास ने रामभक्ति को स्वीकार किया। कबीर का दृष्टिकोण अधिक विद्रोही और सुधारवादी था, तुलसीदास का अधिक समन्वयकारी।

2. कबीर दास और सूरदास -- समानताएँ दोनों भक्ति आंदोलन के प्रमुख संत थे। दोनों ने सरल भाषा में काव्य रचना की।

भिन्नताएँ कबीर निर्गुण ईश्वर को मानते थे, जबकि सूरदास कृष्ण के सगुण रूप के उपासक थे। सूरदास की रचनाएँ भावनात्मक और लीलाओं पर आधारित हैं, जबकि कबीर की रचनाएँ ज्ञान और सत्य पर आधारित हैं। कबीर समाज सुधारक थे, सूरदास मुख्यतः भक्ति और प्रेम के कवि।

3. कबीर दास और गुरु नानक - समानताएँ दोनों ने एकेश्वरवाद (एक ईश्वर) का समर्थन किया। दोनों ने जाति प्रथा और पाखंड का विरोध किया। दोनों की वाणी में मानवता और समानता का संदेश है।

भिन्नताएँ कबीर का कोई संगठित धर्म नहीं बना, जबकि गुरु नानक के उपदेशों से सिख धर्म की स्थापना हुई। गुरु नानक की शिक्षाएँ अधिक व्यवस्थित और संस्थागत रूप में विकसित हुईं।

4. कबीर दास और मीरा बाई – समानताएँ दोनों ने भक्ति को जीवन का मुख्य आधार माना। दोनों ने समाज की परंपराओं को चुनौती दी।

भिन्नताएँ कबीर निर्गुण भक्ति के समर्थक थे, मीरा बाई कृष्ण की सगुण भक्ति में लीन थीं। मीरा की भक्ति अत्यंत भावनात्मक और प्रेममयी है, जबकि कबीर की भक्ति ज्ञान और तर्क पर आधारित है।

5. कबीर दास और रैदास --- समानताएँ दोनों ने जाति प्रथा का विरोध किया। दोनों निम्न वर्ग से आए और समाज सुधार के पक्षधर थे। दोनों की भक्ति निर्गुण धारा से जुड़ी हुई है।

भिन्नताएँ रैदास की वाणी में अधिक विनम्रता और भक्ति का भाव है। कबीर की वाणी अधिक तीखी, स्पष्ट और व्यंग्यपूर्ण है।

कबीर दास के प्रमुख दोहा

1. पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय, ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।

अर्थ: कबीर दास कहते हैं कि सिर्फ पुस्तकें पढ़ने से कोई पंडित नहीं बन जाता, बल्कि प्रेम के दो अक्षर पढ़ने वाला ही पंडित होता है।

2. गुरु गोविंद दोउ खड़े, काके लागौं पाय, बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय।

अर्थ: कबीर दास कहते हैं कि गुरु और गोविंद दोनों खड़े हैं, किसके पैर लगूं, लेकिन गुरु ने ही गोविंद का पता बताया है, इसलिए गुरु के पैर लगूं।

3. साईं इतना दीजिये, जा में कुटुम समाय, मैं भी भूखा न रहूँ, साधु न भूखा जाय।

अर्थ: कबीर दास कहते हैं कि हे साईं, मुझे इतना दो कि मेरा परिवार भी संतुष्ट हो जाए और मैं भी भूखा न रहूं, और साधु भी भूखा न जाए।

4. कबीरा हरि की भक्ति में, भया अनन्य विचार, जैसे गंगाजल में, मिल गया जल सार।

अर्थ: कबीर दास कहते हैं कि हरि की भक्ति में उनका विचार एक हो गया है, जैसे गंगाजल में जल मिल जाता है।

5. मन हीं मन लागी आग, जल जल करे शरीर, कबीरा क्या करे, जब लग तेरी नाहिं पीर।

अर्थ: कबीर दास कहते हैं कि मन में आग लगी है, शरीर जल रहा है, लेकिन जब तक आपकी पीर नहीं है, तब तक कबीर क्या कर सकता है।

6. मलमल दोगे शरीर को, धोए ना मां का मेल, नहाए गंगा घूमती रहे, बेल का बैल

अर्थ - मलमल दोगे शरीर को: अगर आप अपने शरीर को मलमल से धोते हैं, तो भी आपके शरीर का मैल नहीं जाएगा।

धोए ना मां का मेल: इसी तरह, अगर आप गंगा में नहाते हैं, तो भी आपके मन का मैल नहीं जाएगा। नहाए गंगा घूमती रहे:

गंगा में नहाने से कुछ नहीं होगा, अगर आपके मन में पाप है। , बेल का बैल , कि जो काम करने से कुछ नहीं होगा, वह काम करना व्यर्थ है।

दोहे का संदेश यह है कि सिर्फ बाहरी शुद्धि से कुछ नहीं होगा, मन की शुद्धि भी आवश्यक है। अगर आपके मन में पाप है, तो गंगा में नहाने से कुछ नहीं होगा।

साखी (दोहा)

साखी कबीर की सबसे प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। ये छोटे-छोटे दोहे होते हैं, जिनमें गहरा जीवन-दर्शन छिपा होता है।

(7) माला फेरत जुग भया

दोहा:

माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर
कर का मनका डार दे, मन का मनका फेर

व्याख्या:

इस दोहे में कबीर दास जी कहते हैं कि केवल हाथों से माला जपने से कुछ नहीं होता। असली परिवर्तन मन का होना चाहिए।

संदेश: आंतरिक शुद्धि ही सच्ची भक्ति है।

(8) पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ

दोहा:

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय

व्याख्या:

कबीर जी कहते हैं कि केवल किताबें पढ़ने से कोई विद्वान नहीं बनता। सच्चा ज्ञान प्रेम और करुणा में है।

संदेश: ज्ञान का सार प्रेम है।

(9) जाति न पूछो साधु की

दोहा:

जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान
मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान

व्याख्या:

यहाँ कबीर जाति प्रथा का विरोध करते हैं। वे कहते हैं कि व्यक्ति का मूल्य उसके ज्ञान और गुणों से होना चाहिए, न कि उसकी जाति से।

संदेश: मानव समानता।

(10) बुरा जो देखन मैं चला

दोहा:

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय
जो दिल खोजा आपना, मुझसे बुरा न कोय

व्याख्या:

कबीर जी बताते हैं कि हम दूसरों में बुराई खोजते हैं, लेकिन असली बुराई हमारे भीतर होती है।

संदेश: आत्मनिरीक्षण।

सबद (भजन)

सबद कबीर के गेय पद हैं, जिनमें भक्ति और आध्यात्मिकता का सुंदर समन्वय होता है।

(1) मोको कहाँ ढूंढे रे बंदे

पंक्तियाँ:

मोको कहाँ ढूंढे रे बंदे, मैं तो तेरे पास में
ना मैं मंदिर, ना मैं मस्जिद, ना काबे कैलाश में

व्याख्या:

इस सबद में कबीर कहते हैं कि ईश्वर बाहर नहीं, बल्कि हमारे भीतर ही है।

संदेश: ईश्वर का निवास मानव के भीतर है।

(2) झीनी-झीनी बीनी चदरिया

पंक्तियाँ:

झीनी-झीनी बीनी चदरिया

व्याख्या:

यहाँ "चदरिया" मानव शरीर का प्रतीक है। कबीर बताते हैं कि यह शरीर ईश्वर की बनाई हुई एक अनमोल वस्तु है, जिसे हमें पवित्र रखना चाहिए।
संदेश: जीवन की पवित्रता और नश्वरता।

रमैनी -

रमैनी कबीर की अपेक्षाकृत लंबी रचनाएँ हैं, जिनमें दार्शनिक विचारों का विस्तार मिलता है।
विशेषताएँ:
इनमें आध्यात्मिक ज्ञान का विस्तार होता है |जीवन, माया और ईश्वर के संबंध की व्याख्या |भाषा सरल लेकिन अर्थ गहरा
रमैनी में कबीर ने बताया है कि संसार माया का जाल है और मनुष्य को सत्य की ओर बढ़ना चाहिए।
उलटबांसी
कबीर की एक अनोखी रचना शैली उलटबांसी है, जिसमें वे उलटी या विरोधाभासी बातें कहकर गहरा अर्थ समझाते हैं।
उदाहरण
अंबर भीतर धरती, धरती भीतर आकाश
व्याख्या
यह पंक्ति प्रतीकात्मक है। इसका अर्थ है कि संसार में सब कुछ एक-दूसरे से जुड़ा हुआ है।
संदेश: ब्रह्म और जगत की एकता।

निष्कर्ष -

"कबीर दास जी ने हिंदी साहित्य को एक नई दिशा दी और भक्ति आंदोलन को आगे बढ़ाया" उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने और लोगों को सत्य, प्रेम, और सेवा के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया। सत्य, प्रेम, और सेवा में ही जीवन की सार्थकता है" उन्होंने अपने जीवन और रचनाओं में इस बात पर जोर दिया कि जीवन को सार्थक बनाने के लिए हमें सत्य के मार्ग पर चलना, प्रेम की भावना को अपनाना, और दूसरों की सेवा करनी चाहिए। कबीर दास अन्य संतों से कई मायनों में भिन्न और विशिष्ट हैं। उनका दृष्टिकोण अधिक क्रांतिकारी और सुधारवादी था। जहाँ अन्य संत भक्ति के माध्यम से ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग दिखाते हैं, वहीं कबीर भक्ति के साथ-साथ सत्य, तर्क और सामाजिक सुधार पर भी जोर देते हैं। इसी कारण कबीर दास जी को केवल संत कवि ही नहीं, बल्कि एक महान चिंतक और समाज सुधारक भी माना जाता है।

संदर्भ ग्रंथ-

1. सिंह, प्रो. पुष्प पाल , कबीर ग्रंथावली सटीक , पृष्ठ संख्या 11
2. तिवारी, डॉ. भृगु नाथ, हिंदी संत काव्य में सगुण भावना , पृष्ठ संख्या 90 - 91
3. वर्मा, रामकुमार, संत कबीर पृष्ठ संख्या - 76
4. नागेंद्र , हिंदी साहित्य का इतिहास पृष्ठ संख्या -
5. वर्मा , धीरेंद्र हिंदी साहित्य कोश द्वितीय संस्करण 1986 पृष्ठ संख्या 65
6. दास, श्यामसुंदर (बाबू) , कबीर ग्रंथावली, अष्टपदी रमैनी , पृष्ठ संख्या- 386
7. सिंह , शुक्र देव , बीजक पृष्ठ संख्या - 181
8. द्विवेदी हजारी प्रसाद कबीर संस्करण 1941 ई. पृष्ठ संख्या-126
9. दास , श्याम सुंदर , (बाबू) कबीर ग्रंथावली , साखी पृष्ठ संख्या 46
10. तिवारी, पारसनाथ , कबीर ग्रंथावली पद -158 पृष्ठ संख्या 92